Topic – CC-7 PG III

GAD (Genralised Anxiety Disorder)
(सामान्यीकृत चिन्ता विकृति)

DSM IV के सामान्यीकृत चिन्ता विकृति को चिन्ता-विकृतियों का एक मुख्य कारण माना है। मनः स्नायु विकृतियों के स्थान पर चिन्ता विकृति का उल्लेख किया है और जिन विकृतियों को मनःस्नायुविकृति का प्रकार माना गया था इनमें से अधिकांश को चिन्ता विकृति के प्रकार के रूप में माना गया। इनमें दुर्भीति विकृति, आतंक विकृति, मनोग्रसित-बाध्यता विकृति तथा सामान्यीकृत चिन्ता विकृति मुख्य है। अतः सामान्यीकृत चिन्ता विकृति वास्तव में चिन्ता विकृतियों का एक प्रकार है। सामान्य चिन्ता विकृति को चिन्ता प्रतिक्रिया भी कहा जाता है।

मनोवैज्ञानिक डेवीसन तथा नील के अनुसार, "सामान्यीकृत चिन्ता विकृति, चिन्ता विकृतियों का एक प्रकार है; जिसमें चिन्ता इतनी अधिक चिरकालिक, दृढ़ तथा व्यापक होती है कि यह स्वतंत्र प्रवाही लगती है।"

होम्स के अनुसार, "सामान्यीकृत चिन्ता विकृति एक विकृति है जिसमें व्यक्ति उत्तेजना परिस्थिति से बिना प्रभावित हुए ही चिन्तित रहता है। चिन्ता स्वतन्त्र प्रवाही होती है।"

सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के लक्षण (Symptoms या Clinical Picture) :– सामान्यीकृत चिन्ता विकृति से मानसिक रोग के कुछ निश्चित लक्षण का पता चलता है, जिसके आधार पर इस मानसिक रोग की नैदानिक पहचान या निदान सम्भव होता है। इन लक्षणों को इस प्रकार विभाजित किया गया है :—

(1) गति-तनाव (Motor tension) — सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के रोगी में गति-तनाव देखा जाता है।

इस लक्षण से पीड़ित व्यक्ति उत्तेजित, बेचैन तथा प्रत्यक्षत: कम्पायमान होता है और वह शिथिल रहने या विश्राम करने में असमर्थ होता है। इसमें रोगी का मुखाकृति गम्भीर, प्राय: तनी हुई होती है।

(2) स्वायत प्रतिक्रियाक्षमता (Automomic reactivity) — इस मानसिक रोग का लक्षण स्वायत प्रतिक्रिया क्षमता है। इस लक्षण वाले रोगी में सहानुभूतिक तथा उपसहानुभूतिक स्नायु-तंत्र अधिक क्रियाशील रहते हैं। परिणामत: रोगी में पसीना बहना, चक्कर, धड़कन, सर्द एवं चिपचिपा हाथ, गड़बड़ पेट, बार-बार पेशाब या पैखाना होना, गला में सूजन तथा नाड़ी-स्पंद तथा श्वसन गति में तेजी आदि लक्षण पाए जाते हैं।

(3) भविष्य के प्रति आशंकित भाव (Apprehensive feelings about the future) :— इस विकृति से पीड़ित रोगी अपने भविष्य के सम्बन्ध में चिन्तित तथा सशंकित रहता है। वह यह सोच-सोच कर सशंकित रहता है कि उसका भविष्य असुरक्षित है और उसका भविष्य इसके लिए दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हो सकता है। इसके साथ-साथ रोगी अपने सम्बन्धियों, मित्रों अथवा अपनी मूल्यवान सम्पत्तियों के सम्बन्ध में सशंकित तथा चिन्तित रहा करता है।

(4) अति सतर्कता (Hypervigilance) :— सामान्यीकृत चिन्ता विकृति से पीड़ित रोगी अपने जीवन के प्रति संतरी जैसा उपागम रखता है। वह अपने जीवन के प्रति अतिसतर्कता की नीति रखता है। वह निरन्तर वातावरण को खतरों से परिपूर्ण समझता है। यद्यपि वह खतरों को अलग-अलग बतलाने में सफल नहीं होता। इस अतिसतर्कता का बाधक प्रभाव रोगी की निद्रा पर पड़ता है।

(5) सहज ध्यान भंग (Easy distraction) — अतिसतर्कता तथा अतिसंवेदनशीलता के कारण रोगी का ध्यान आसानी से भंग होता रहता है।

ध्यान भंग के कारण रोगी किसी एक विषय या वस्तु पर अपने ध्यान को केन्द्रित नहीं कर पाता है।

(6) चिड़चिड़ापन एवं अतिसंवेदनशीलता (Irritability and hypersensitivity) सामान्यीकृत चिन्ता विकृति के रोगी में चिड़चिड़ापन तथा अतिसंवेदनशीलता का लक्षण पाया जाता है। रोगी प्रायः चिड़चिड़ा रहता है और साधारण बात पर भी अति उत्तेजना एवं अतिसंवेदनशीलता व्यक्त करता है।

(7) स्वतन्त्र प्रवाही चिन्ता (Free floating anxiety) — इस मानसिक रोग का सबसे प्रमुख तथा प्रभेदक लक्षण स्वतन्त्र-प्रवाही चिन्ता है। यह लक्षण मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत पर आधारित प्रवाही भाव जैसा है, जिसका तात्पर्य ऐसी संवेदनात्मक अवस्थाओं से है जो किसी खास वस्तु या घटना से सम्बद्ध नहीं होती है। इसमें स्वतन्त्र प्रवाही चिन्ता का तात्पर्य व्यक्ति के सामान्यीकृत भावों से है, जो मौलिक कारणात्मक परिस्थितियों से स्वतन्त्र हो गए है। ऐसी स्थिति में स्वतन्त्र प्रवाही चिन्ता अस्पष्ट, अवास्तविक, चिरकालिक दृढ़ तथा व्यापक होती है।

अतः स्पष्ट है कि सामान्यीकृत चिन्ता विकृति (GAD) के उपर्युक्त कई लक्षण है। इन लक्षणों के आलोक में इससे पीड़ित रोगी का निदान करना सम्भव हो जाता है।